नींद में मैं क्या पाया, क्या खोया

कॉलेज में पढ़ने तक कुछ लिखता था मैं शायरी,
ड्रॉपआउट बना, लेकिन मिल गई मुझे नौकरी।
पिस गया संघर्ष में, लगा संसार में ध्यान—
कब तक वाग्देवी रहतीं मेरे पर मेहरबान? ०१

अचानक क्या हुआ अब, मुझे नहीं पता,
माँ आई मेरे गले में जब मैं नींद से उठा।
आया कुछ सोच, तो सोचा अभी लिख के रख लूँ,
हो सके तो किसी समझदार को प्यारभरी भेंट दूँ। ०२

लिखा जो आज सुबह, आप लोगों के गले में,
फूल का हो या काँटे का—यह माला पहना दूँ।

कृपया पढ़िए, मेरे दोस्तों,

बुरा लगे तो जी भर के गालियाँ दे देना,
गाली भी करें दोस्त, तो मुझे अमृत-सा पी लेना। ०३

निंदिया माँ की गो में जब मैं सोया रहा था,
ना था मेरा कोई ज्ञान, ना कोई सम्मान मेरा था।

तब भी ना थी कोई पीड़ा, किसी अपमान भी नहीं था,
ना था एक पैसा मेरे पास, लेकिन मैं निर्धन भी नहीं था ॥०४

ना था मेरा कोई दोस्त, कोई दुश्मन भी नहीं था,
गहरी नींद में बेहोश जब मैं सोया रहा था।
ना जाने मैं सोया या कहीं खोया हुआ था,
खोया भी था मैं कहीं या मरा ही पड़ा था? ०५

जो भी हो, निद्रा-देवी के चुम्बन में आराम बड़ा था,
हर क्लेश, हर द्वेष मुझसे कहीं दूर ही खड़ा था
गहरी नींद में बेहोश जब मैं सोया रहा था,
इतनी दूर से मुझ पर उनकी फीकी नज़र तक नहीं थी। ०६

टूट गई निंदिया, तो मुझे दिख गया संसार—
देखा सूरज की रोशनी, सुनी हँसी और ठहाकार ।
एक ओर लोगों का झगड़ा, दूसरी ओर पड़ोसन की रियाज़;
"शीर्ष पंक्तियाँ" करता था टीवी पर शोर-आवाज़ ॥ ०७

'जान चली गई किसी की, उसका प्यार था गुनहगार',
पड़ोस सुनकर बोले—"चलता है सब, जाने दो यार ॥"
स्नान किया, ध्यान किया, चल पड़ा मैं भीड़ में खोने को,
बन गया मैं मशीन, दिनका चावल, रातकी रोटी कमाने को ।८

एक पल कम से मुझे छुटकारा नहीं था,
घर लौटकर सोचा—"रात को कैसे मैं सोया रहा था?"
तन से मन था अलग जब मैं सोया हुआ था,
दिन भर होश के बाद बेहोशी फिर प्यारी लगी थी। ९

नींद में आराम, जागने सेतकलीफ़— ये कैसी, ख़ुदा, तेरी माया?
या हर थकाव के बाद प्राणीको बेहोशी की मिलती दया?
तेरी सोच तेरे पास रख, ख़ुदा, क्यों करूँ तुझे परेशान?
छोड़ दे मुझे मेरे हाल में, अगर तू है मेहरबान । १०

मुझे सोचने दे— "नींद में मैं क्या पाया, क्या खोया?"
निद्रा माँ, मत रूठना मुझसे, अगर मुझ पर है थोड़ी दया ॥ ११

ललाटेन्दु कवि ३०/३१-०५-२०१३